

विवेकचूडामणि

श्लोक २२

अगणित इन्द्रिय-विषयों के दोषों का बार-बार निरीक्षण करने की प्रक्रिया द्वारा जब मन अपने आपको उनसे अनासक्त रखकर, अपने परमोच्च लक्ष्य पर केन्द्रित होता है व उसका चिन्तन करता है तो वह मन की शम स्थिति है।

विवेकचूडामणि, श्लोक २२

भाषान्तर © २०१९ एस. वाय. डी. ए. फाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

विवेकचूडामणि के इस श्लोक में, आदि शंकराचार्य सिखाते हैं कि मन की शम स्थिति का मार्ग, विवेक के अभ्यास में निहित है। वे चाहते हैं कि हम आध्यात्मिक जीवन के “परमोच्च लक्ष्य” और “दोषों” सहित “अगणित इन्द्रिय-विषयों” के बीच जो अन्तर है, उसका विवेकपूर्ण भेद करें।

ऋषि आदि शंकराचार्य जिन “दोषों” पर ध्यान देने के लिए हमसे कह रहे हैं उनका सम्बन्ध सांसारिक चीजों की क्षणभंगुरता से है। यौवन और शारीरिक सुन्दरता निश्चित ही क्षीण हो जाएँगी। धन-समृद्धि व भौतिक सम्पदा आते हैं और चले जाते हैं। व्यक्तिगत सम्बन्ध सदा के लिए नहीं रहते। इस तरह की प्राप्तियाँ हमें कभी-भी स्थायी सन्तोष नहीं दे सकतीं, और अन्ततः इन आते-जाते भोग-विलासों के बारे में सोचना हमारे मन को केवल विचलित ही करता है। हमारा मन तभी शान्त होता है जब हम इन क्षणिक सुखों से अपना ध्यान हटाते हैं।

आदि शंकराचार्य हमें बताते हैं कि जब हम अपना ध्यान “परमोच्च लक्ष्य” पर यानी परम चिति के साथ एकाकार की शाश्वत स्थिति पर केन्द्रित करते हैं तब हमारा मन शम व शुद्ध हो जाता है।

अतः इस श्लोक में हमें श्रीगुरुमाई के वर्ष २०१९ के सन्देश को लागू करने का एक अचूक उपाय मिलता है। अपने मन को “परमोच्च लक्ष्य पर केन्द्रित होने व उसका चिन्तन करने” हेतु मार्गदर्शित करके, हम मन के मूल स्वरूप को जान पाते हैं — हम “मन की शम स्थिति” का अनुभव कर पाते हैं जो परम चिति के प्रकाश को पूर्णतयः प्रतिबिम्बित करती है; परम चिति का प्रकाश ही मन का स्रोत है। बार-बार उस पर केन्द्रित होने से जो चिरस्थायी है, हम बारम्बार अपनी सच्ची आत्मा के शुद्ध प्रकाश में आनन्दित होते हैं।



© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।